

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 15, प्रकाशितवाक्य 10-11, तुरही और अंतराल

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र 15, प्रकाशितवाक्य अध्याय 10 और 11, तुरही और अंतराल है।

अंतिम प्लेग में, ट्रम्पेट प्लेग, जो अध्याय 9 में उल्लिखित छठा प्लेग होगा, हमें चार स्वर्गदूतों से परिचित कराया गया है जो अध्याय 7 की शुरुआत में हवाओं को रोकने वाले चार देवदूत हो सकते हैं। अब, वे अंततः रिहा हो गए हैं और उन्हें अपना विनाशकारी निर्णय जारी करने और पृथ्वी पर कहर बरपाने की अनुमति दी।

और वे ऐसा भीड़ या अपने घोड़ों पर सवारों के एक बड़े समूह के रूप में करते हैं। और चार स्वर्गदूतों को यहाँ घोड़ों पर सवारों के नेताओं के रूप में देखा जा सकता है। यह स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह संभव है।

निश्चित रूप से, उन्हें रिहा करने के लिए वे ही जिम्मेदार हैं। घोड़ों पर सवारों की संख्या या इस घुड़सवार सेना की संख्या कम से कम अंग्रेजी अनुवाद में यहां नए अंतर्राष्ट्रीय संस्करण में वर्णित है जिसे मैं 200 मिलियन के रूप में पढ़ रहा हूँ। वस्तुतः, यह दो गुना 10,000 गुना 10,000 है, जो इस प्रकार है कि हमें 200 मिलियन मिलते हैं।

लेकिन शायद ग्रीक पाठ में, इसका मतलब कुछ इस तरह का प्रतीक है, इसका मतलब एक ऐसी संख्या को इंगित करना है जो समझ से परे थी। किसी के लिए यह कहना आधुनिक समय का समतुल्य हो सकता है कि कम से कम एक गजिलियन थे। यह कोई संख्या नहीं है जिसे कोई गिन सके।

यह सिर्फ यह कहने का एक तरीका है कि इतने सारे लोग हैं कि आप उन्हें गिन नहीं सकते। इसलिए अतीत में यह पूछना आम बात रही है कि हमें ऐसा राष्ट्र या देश कहां मिलेगा जिसकी सेना में 200 मिलियन लोग हो सकते हैं? और यहां तक कि कुछ सुझाव भी दिए गए हैं कि किसके पास इतने सारे हैं या कौन कर सकता है। लेकिन यह जॉन की बात से परे है क्योंकि उसे घुड़सवार सेना के 200 मिलियन शाब्दिक सदस्यों में कोई दिलचस्पी नहीं है।

वह एक संख्या का उपयोग कर रहा है जो, जैसा कि मैंने कहा, हमारे गैज़िलियन के समान है। यह इतनी अधिक है कि आप इसे गिन नहीं सकते। इसलिए हम उस बिंदु को भूल जाते हैं जब हम चारों ओर देखने की कोशिश करते हैं और एक ऐसे राष्ट्र या देश को ढूंढते हैं जिसके पास 200 मिलियन की सेना हो सकती है।

जॉन 200 मिलियन के संदर्भ में नहीं सोच रहे हैं। वह उनकी समझ से परे एक संख्या के बारे में सोच रहा है। इस सेना या इस घुड़सवार सेना का वर्णन वास्तव में पिछले ट्रम्पेट प्लेग के स्थान से बहुत निकटता से मेल खाता है।

ध्यान दें कि उन्हें शेर के दाँत वाला बताया गया है। उनमें पशु और सरीसृप जैसी विशेषताएं हैं। वे धुएं और सल्फर से भी जुड़े हुए हैं।

तो स्पष्ट रूप से, इसे एक भौतिक सांसारिक सेना के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए, बल्कि एक बार फिर, सैनिकों के एक समूह के प्रतीकवाद का उपयोग करते हुए, इसे प्रतीकात्मक रूप से एक राक्षसी हमले को संदर्भित करने के लिए, राक्षसी अलौकिक प्राणियों को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है, न कि एक शाब्दिक सांसारिक सेना के रूप में। किसी भी राष्ट्र से संबंधित। लेकिन टिड्डियों के विपरीत, वे सिर्फ नुकसान पहुंचाने से कहीं आगे जाते हैं, और यह एक अलग समूह बनाने का मतलब हो सकता है। वे मानवता को नुकसान पहुंचाने से भी आगे निकल जाते हैं।

अब, उन्हें वास्तव में कम से कम एक तिहाई मानवता को मौत के घाट उतारना है, एक तिहाई सीमा की छवि है। इसलिए यह अंतिम निर्णय नहीं है, लेकिन किसी तरह से, उन्हें मानवता के एक तिहाई हिस्से को मौत की सज़ा देने की अनुमति है। इसलिए, यह पाँचवीं तुरही से आगे तीव्र हो जाता है।

एक बार फिर सवाल उठता है कि हम इसकी कल्पना कैसे करें? क्या इसे शारीरिक, शाब्दिक मृत्यु समझा जाए? क्या यह आध्यात्मिक मृत्यु है? क्या यह दोनों का संयोजन है? मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं अनिश्चित हूँ कि वास्तव में वह क्या है। यह शारीरिक मृत्यु हो सकती है। यदि है तो वह कैसे पूरा हुआ? निश्चित रूप से, आध्यात्मिक मृत्यु उपयुक्त होगी।

आप रहस्योद्घाटन के बिल्कुल अंत में पाते हैं, लोग शारीरिक मृत्यु के साथ-साथ दूसरी मृत्यु, जो आग की झील और ईश्वर से पूर्ण अलगाव है, दोनों से पीड़ित हैं। क्या यह संभव है कि यहां लोगों को शारीरिक रूप से मौत के घाट उतारने की उनकी क्षमता पूर्ण आध्यात्मिक मृत्यु और ईश्वर से पूर्ण अलगाव का प्रतीक है? यह निश्चित रूप से संभव है। अनिश्चित।

ये प्राणी, दिन के अंत में, मानवता को धोखा देने के लिए ज़िम्मेदार हैं, जो वही चीज़ है जो शैतान अध्याय 12 में करता है, वही चीज़ जो जानवर अध्याय 13 में करता है। तो शायद आपके पास धोखे की यह छवि है, ये राक्षसी प्राणी पूरी मानवता को मूर्तिपूजा और मूर्तिपूजा में धोखा देने के साथ-साथ उनकी आध्यात्मिक मृत्यु, शायद उनकी शारीरिक मृत्यु भी हो गई। हालाँकि फिर भी, यह स्पष्ट नहीं है कि यह कैसे होगा।

जॉन को ईश्वर के फैसले के धार्मिक अर्थ और महत्व की खोज करने में अधिक रुचि है और हमें यह नहीं बताना है, कम से कम 21वीं सदी में इसे पढ़ते हुए, यह निश्चित नहीं है कि अगर हम इसे देखेंगे तो यह कैसा दिखेगा। श्लोक 20 और 21 इन सबके अंत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। और वह यह है कि विपत्तियाँ मुख्यतः न्याय के लिए प्रतीत होती हैं।

तो, इन सभी को एक साथ जोड़कर, हम कह सकते हैं कि ये विपत्तियाँ मूर्तिपूजा, श्लोक 20, मानवता की मूर्तिपूजा, उन लोगों पर डाली जाती हैं जो व्यर्थता, निराशा, आध्यात्मिक अंधकार और अंततः आध्यात्मिक का प्रदर्शन करके मूर्तियों की पूजा करते हैं। मृत्यु, शायद शारीरिक

मृत्यु, जो उसी का परिणाम है। यह प्रदर्शित करने के लिए कि जिन मूर्तियों की वे पूजा करते हैं, उनके पीछे, मूर्तिपूजा और मूर्तिपूजा प्रणाली के पीछे, यह राक्षसी हमला है जिसका अर्थ है उन्हें नुकसान पहुँचाना। और इसलिए, विशेष रूप से यदि आप रहस्योद्घाटन में चर्चों के अध्याय 2 और 3 के कुछ पाठकों के बारे में सोचते हैं, तो मूर्तिपूजक रोम के साथ समझौता करने का उनका प्रलोभन, अब उन्हें समझौता करने और मूर्तिपूजा अभ्यास में शामिल होने के प्रलोभन को देखने की अनुमति देता है। रोम तटस्थ नहीं है, यह हानिरहित नहीं है।

इसके बजाय, इसके पीछे शैतान और उसके राक्षसों का परमेश्वर के लोगों और वास्तव में, पूरी पृथ्वी को नष्ट करने और नुकसान पहुँचाने का कपटी प्रयास है। इसलिए मुख्य रूप से, ये न्याय की विपत्तियाँ हैं जैसे वे मिस्र के दिनों में थीं। इन्हें दुनिया में दुष्ट, दुष्ट मानवता पर विपत्तियों के रूप में समझा जाना चाहिए।

लेकिन एक छोटा सा सुझाव यह भी है कि इसका एक उद्देश्य पश्चाताप लाना था। क्योंकि आयत 20 कहती है कि शेष मानव जाति जो इन विपत्तियों से नहीं मारी गई, उसने फिर भी पश्चाताप नहीं किया। तो, एक अर्थ में, इन विपत्तियों को पश्चाताप लाने के लिए डिज़ाइन किया गया था, फिर भी इसके बजाय, उन्होंने न्याय में मानवता को और अधिक कठोर कर दिया, जैसा कि उन्होंने मिस्र के दिनों में किया था।

तो यह कविता फिरौन के सख्त होने के विषय की पुनरावृत्ति है। विपत्तियों के जवाब में, फिरौन ने अपना हृदय कठोर करना जारी रखा। और इसलिए अब हम मानवता पर विपत्तियों का वही प्रभाव पाते हैं।

हालाँकि उनका एक कार्य पश्चाताप लाना हो सकता है, इसके बजाय, उन्होंने न्याय लाया, और उन्होंने मानवता के लिए कठोरता ला दी ताकि उन्होंने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया। मुझे लगता है कि इसका एक महत्वपूर्ण निहितार्थ यह है कि हमने अध्याय 8 और 9 में इन विपत्तियों का पूर्वानुमान लगाया है; वे प्रत्याशा के अग्रदूत हैं और लगभग उस अंतिम निर्णय की चेतावनी हैं जो अभी आना बाकी है। और शायद यही एक कारण है कि यह केवल एक-तिहाई है।

यह एक सीमित निर्णय है और अंतिम निर्णय की आशा करता है, एक सीमित निर्णय जिससे मानवता को पश्चाताप करना चाहिए था, फिर भी वे इससे इनकार करते हैं। लेकिन इसे अध्याय 19 और 20 में आने वाले भविष्य के अंतिम फैसले की चेतावनी के संकेत या प्रत्याशा के रूप में देखा जाना चाहिए। लेकिन इसके बारे में महत्वपूर्ण बात यह है कि जब हम अधर्मी राष्ट्रों और दुष्ट, दुष्ट राष्ट्रों की कल्पना करते हैं अध्याय 19 और 20 में न्याय के लिए जाने और आग की झील में फेंके जाने के बारे में, जब हम वहाँ पहुँचेंगे तो हम उन छवियों को देखेंगे।

मुझे लगता है कि हमें वह देखना चाहिए। कभी-कभी, मुझे लगता है कि हम यह विचार मन में लाते हैं कि उन्हें गलत तरीके से वहाँ फेंक दिया जाता है और अनिच्छा से ले जाया जाता है। तो जब लोग अपने अंतिम निर्णय को देखते हैं और उसकी कल्पना करते हैं, तो उन्हें लात मारते और चिल्लाते हुए घसीटा जाता है और उन्हें एहसास नहीं होता कि चीजें इतनी बुरी होने वाली हैं, आदि, आदि।

मुझे लगता है कि अध्याय 9 जैसा पाठ हमें अंतिम निर्णय के धर्मशास्त्र की भाषा, छवियों और समझ को परिप्रेक्ष्य में रखने में मदद करता है। अर्थात्, अध्याय 9 में जो चल रहा है वह यह है कि भले ही मानवता न्याय से पीड़ित है, फिर भी वे पश्चाताप करने से इनकार करते हैं। इसलिए, मैं यह मानता हूँ कि अंतिम निर्णय पर, मानवता अभी भी पश्चाताप करने से इनकार कर देगी।

वे अभी भी जीवन और ईश्वर की उपस्थिति को चुनने के बजाय निर्णय को चुनना पसंद करेंगे, चाहे वह कितना भी भयानक और भयानक क्यों न हो। वे पश्चाताप करने और परमेश्वर के प्रभुत्व को स्वीकार करने के बजाय न्याय का सामना करना पसंद करेंगे। इसलिए मुझे लगता है कि अध्याय 9 हमें यह देखने में मदद करता है कि अंतिम निर्णय वह नहीं है जहां आपके पास ऐसे लोग हैं जो न्याय का सामना कर रहे हैं और बाहर नहीं निकलना चाहते हैं, बल्कि इसके बजाय, आपके पास ऐसे लोग हैं जो निर्णय चुनते हैं और हमेशा के लिए निर्णय चुनते हैं और पश्चाताप करने से इनकार करते हैं क्योंकि वे ऐसा करेंगे पश्चाताप करने और परमेश्वर को महिमा देने और उसकी संप्रभुता और आधिपत्य को स्वीकार करने के बजाय अध्याय 19 और 20 में अनंत काल तक न्याय का सामना करना चाहिए।

अब हमने कहा कि अध्याय 9 में क्रम में सातवीं तुरही को अध्याय 11 और श्लोक 15 से 19 तक विलंबित किया गया है, जो तब भी स्पष्ट रूप से तीसरी विपत्ति होगी। लेकिन सातवीं तुरही आने से पहले, या अध्याय 11 में बाद में तीसरी विपत्ति आने से पहले, हमें अध्याय दस और अध्याय 11 के पहले भाग में एक और संक्षिप्त अंतराल मिलता है, हम इसे कह सकते हैं। यह अंतराल क्या करता है, जैसा कि हमने सुझाव दिया था अध्याय 7 में अन्य अंतर्संबंध यह है कि हमें इसे विषयांतर या अप्रासंगिक सामग्री के सम्मिलन या अनुक्रम के असंबंधित दूरदर्शी टुकड़े के रूप में नहीं समझना चाहिए।

लेकिन इसके बजाय, यह अंतराल अध्याय 8 और 9 में जो हुआ है उसके अर्थ और कार्य की व्याख्या करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, अध्याय 10 और 11 आगे अध्याय 8 और 9 में तुरही निर्णय के आधार का पता लगाते हैं। दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि अध्याय 10 और 11 अध्याय 8 और 9 में क्या चल रहा है, वे क्यों हैं, इसका खुलासा करने जा रहे हैं, और यह सवाल भी उठाते हैं कि भगवान के लोग इसमें क्या भूमिका निभाते हैं? इस दौरान परमेश्वर के लोग क्या कर रहे हैं? परमेश्वर के लोगों के संबंध में स्थिति क्या है? अध्याय 8 और 9 में स्थिति। इसका मतलब यह है कि प्रकाशितवाक्य अध्याय 10 और 11 अध्याय 8 और 9 से अलग घटनाओं या एक अलग समय अवधि का वर्णन नहीं करते हैं। यह घटनाओं की आगे व्याख्या करता है। यह परमेश्वर के लोगों को सामने लाकर और उसके साथ उनके संबंध को प्रदर्शित करके अध्याय 8 और 9 की घटनाओं पर प्रकाश डालता है। अब, प्रकाशितवाक्य के अध्याय 10 में, हम जॉन की भविष्यवाणी करने की दिलचस्प सिफारिश पाते हैं।

हम पहले ही देख चुके हैं कि अध्याय 1 में, यूहन्ना चर्चों के बारे में भविष्यवाणी करता है। अध्याय 2 और 3 में, पुनर्जीवित मसीह द्वारा अध्याय 1 में जॉन को अध्याय 2 और 3 में सात चर्चों में भविष्यवाणी करने के लिए नियुक्त किया गया है, और वह उनके लिए भविष्यवाणी संदेश लाता है। लेकिन अब जॉन को अध्याय 10 में अध्याय 11 में चर्च के वफादार गवाह के बारे में

भविष्यवाणी करने और राष्ट्रों और हर जनजाति और भाषा और भाषा के लोगों के भाग्य के बारे में भविष्यवाणी करने की सिफारिश की गई है, जैसा कि अध्याय 10 हमें बताएगा।

साथ ही यह खंड, अध्याय 10, उस फैसले के बारे में है जो अध्याय 11 में वफादार गवाहों को सताने वालों पर पड़ेगा। तो आप देख सकते हैं कि क्या हो रहा है। अध्याय 8 और 9 के निर्णयों को सटीक रूप से दुष्ट मानवता पर भगवान के फैसले के प्रकाश में समझा जाना चाहिए जो प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 में दो वफादार गवाहों को सताते हैं।

इसलिए प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 में, हम इन दो वफादार गवाहों की कहानी पढ़ेंगे जो अपनी गवाही पूरी करते हैं, लेकिन अंत में, उन्हें मौत की सज़ा दे दी जाती है, और पूरी दुनिया उनकी मौत पर जश्न मनाती है। दूसरे शब्दों में, लेखक फिर से अध्याय 8 और 9 की व्याख्या और व्याख्या कर रहा है। रोमन साम्राज्य सहित दुष्ट मानवता पर भगवान के फैसले का आधार उनकी अस्वीकृति और उत्पीड़न और यहां तक कि प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 में उनके वफादार गवाहों की हत्या भी है। अध्याय 10 तो फिर उसका परिचय देता है।

अध्याय 10 एक परिचय के रूप में कार्य करता है, इसके बारे में भविष्यवाणी करने के लिए जॉन को एक आदेश दिया गया है और अब अध्याय 11 में भगवान के निर्णय की प्रकृति और उनके वफादार गवाह के रूप में चर्च के कार्य की व्याख्या की गई है। अब, अध्याय 10 में, पहले दो छंद, क्या मैं बस अध्याय 10 पर संक्षेप में काम करना चाहता हूं और अध्याय 10 में कई दिलचस्प और, मुझे लगता है, महत्वपूर्ण महत्वपूर्ण विशेषताओं पर प्रकाश डालना चाहता हूं। अध्याय 10, छंद 1 और 2। पहले मुझे वह पढ़ने दीजिए, और फिर हम धीमे हो जाएंगे और पाठ में कुछ विवरण देखें।

यूहन्ना कहता है, फिर मैं ने एक और पराक्रमी स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा। वह बादल का वस्त्र पहने हुए था और उसके सिर के ऊपर इंद्रधनुष था। उसका मुख सूर्य के समान था।

उसके पैर अग्निमय खम्भों के समान थे। उसके हाथ में एक छोटी पुस्तक थी जो उसके हाथ में थी। उसने अपना दाहिना पैर समुद्र पर और अपना बायां पैर भूमि पर रखा, और सिंह की दहाड़ के समान ऊंचे शब्द से चिल्लाया।

जब वह चिल्लाया, तो सात गर्जन की आवाजें सुनाई दीं। और जब सातों गर्जन बोले, तो मैं लिखने ही वाला था, परन्तु मैं ने स्वर्ग से यह शब्द सुना, कि जो सातों गर्जनों ने कहा है उस पर मुहर लगा दो, और उसे मत लिखो। तब जिस स्वर्गदूत को मैं ने समुद्र और भूमि पर खड़ा देखा था, उसने अपना दाहिना हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर उस की शपथ खाई, जो युगानुयुग जीवित है, जिस ने स्वर्ग और जो कुछ उनमें है, और पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, सृजा। यह, और समुद्र और जो कुछ उसमें है।

और उन्होंने कहा कि अब और देरी नहीं होगी, या कुछ अनुवाद कह सकते हैं, और समय नहीं रहेगा। परन्तु उन दिनों में जब सातवाँ स्वर्गदूत अपनी तुरही बजाने ही वाला है, परमेश्वर का रहस्य पूरा हो जाएगा, जैसा कि उसने अपने सेवकों, भविष्यवक्ताओं को बताया था। तब जो शब्द मैं ने

स्वर्ग से सुना था, उसने फिर मुझ से कहा, जो स्वर्गदूत समुद्र और भूमि पर खड़ा है, उसके हाथ से जाकर वह खुली हुई पुस्तक ले ले।

इसलिए मैं स्वर्गदूत के पास गया और उससे वह छोटी पुस्तक मुझे देने को कहा। उसने मुझसे कहा, इसे ले लो और खा लो. यह आपके पेट को खट्टा कर देगा, लेकिन आपके मुंह में यह शहद जैसा मीठा होगा।

मैंने स्वर्गदूत के हाथ से वह छोटी पुस्तक ले ली और उसे खा लिया। मेरे पेट में उसका स्वाद शहद के समान मीठा था, परन्तु जब मैंने उसे खाया तो मेरा पेट खट्टा हो गया। तब मुझसे कहा गया कि तुम्हें कई लोगों, राष्ट्रों, भाषाओं और राजाओं के बारे में फिर से भविष्यवाणी करनी होगी।

और वह चौगुना वर्णन है जिसे हम पूरे प्रकाशितवाक्य में सात बार पाते हैं। अब, अध्याय 10 शुरू होता है, फिर से, यह अनुशंसित दृश्य। अब, जॉन को चर्च की स्थिति और न्याय के संबंध के बारे में नए सिरे से भविष्यवाणी करने और सभी राष्ट्रों, जनजातियों, भाषा और विभिन्न जनजातियों और भाषाओं के लोगों की भूमिका के बारे में भविष्यवाणी करने की सिफारिश की जा रही है।

अध्याय 10 इस कमीशनिंग की शुरुआत जॉन के एक अन्य देवदूत के दर्शन से करता है। तो, सर्वनाश देवदूत प्राणियों से भरे हुए हैं। यह देवदूत अब स्वर्ग से नीचे आता है।

तो जॉन अभी भी अध्याय 8 और 9 से प्रतीत होता है; ऐसा लगता है कि जॉन अभी भी चीजों को सांसारिक दृष्टिकोण से देख रहा है। जैसा कि हमने देखा, रहस्योद्घाटन स्वर्ग से पृथ्वी पर आगे-पीछे होता रहता है। अब, जॉन चीजों को सांसारिक परिप्रेक्ष्य से देखता है जैसे कि एक शक्तिशाली स्वर्गदूत स्वर्ग से और जाहिर तौर पर पृथ्वी पर उतर रहा है।

वास्तव में, उसका वर्णन पृथ्वी और समुद्र पर, एक पैर समुद्र में, एक पैर जमीन पर खड़ा होने के रूप में किया गया है, जो संभवतः सभी चीजों पर उसकी संप्रभुता, पूरी सृष्टि पर उसकी संप्रभुता का सुझाव देता है। लेकिन इस देवदूत का वर्णन जिस प्रकार किया गया है वह अनोखा है। आप वास्तव में प्रकाशितवाक्य में किसी अन्य देवदूत को उस तरह से या उस हद तक वर्णित नहीं पाते हैं जिस तरह से यहाँ प्रकाशितवाक्य 10 में देवदूत का वर्णन किया गया है।

सबसे अधिक संभावना है, जब इसकी पहचान की बात आती है, तो हमें संभवतः इस देवदूत को स्वयं यीशु मसीह के रूप में समझना चाहिए। उसके बारे में कई बातों पर गौर करें। उदाहरण के लिए, तथ्य यह है कि उसने कपड़े पहने हुए थे, वह एक बादल में लिपटा हुआ था, शायद मसीह के बादलों पर आने की याद दिलाता है, विशेष रूप से डैनियल अध्याय 7 से, अध्याय 1 या प्रकाशितवाक्य 1 से मनुष्य के पुत्र की कल्पना जिसे जॉन ने उठाया है।

यह तथ्य कि उसके सिर के ऊपर एक इंद्रधनुष है, प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 में इंद्रधनुष और भगवान के संबंध में सिंहासन कक्ष के दृश्य की याद दिलाता है। उसके पैर अग्रिमय स्तंभ हैं, अध्याय 1 में उसके पैर कांस्य के स्तंभों के रूप में याद दिलाते हैं, मसीह का वर्णन। इसके अलावा, तथ्य यह है कि अब वह अपने हाथों में एक खर्चा खुला रखता है।

मैं इसके बारे में एक क्षण में बात करूंगा, लेकिन यह सब एक साथ रखने पर, यह देवदूतीय प्राणी जिसे जॉन देखता है, संभवतः रहस्योद्घाटन में किसी भी अन्य देवदूतीय अस्तित्व के विपरीत है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम संभवतः इस शक्तिशाली देवदूत को यीशु मसीह के व्यक्तित्व के अलावा और कोई नहीं समझते हैं जो बादल में लिपटा हुआ है, उसके सिर के ऊपर एक इंद्रधनुष है, पैर खंभे की तरह हैं, और अब एक पुस्तक पकड़े हुए आता है। इस स्कॉल का महत्व, मुझे लगता है, ठीक है, सबसे पहले, समर्थन करने के लिए, यह प्रश्न उठता है क्योंकि हमने कई किताबें या स्कॉल देखे हैं जहां हमें संदर्भित किया गया था, हमने पाया कि प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में पुस्तक का उल्लेख किया गया है जीवन की।

हमें प्रकाशितवाक्य के अध्याय 5 में एक स्कॉल से परिचित कराया गया था, वह स्कॉल जो भगवान के दाहिने हाथ में था जिसमें उनके राज्य का उद्घाटन करने और पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने, मोक्ष और न्याय लाने की योजना थी। अब, हमारा परिचय एक और स्कॉल से हुआ है। इसे थोड़ा स्कॉल इसलिए कहा जाता है क्योंकि यहां ग्रीक शब्द वास्तव में वही है जिसे छोटा कहा जाता है।

इसलिए अक्सर, दूसरे शब्दों में, इसका एक अंत होता है जो अनुवाद का सुझाव देता है, एक छोटा या छोटा स्कॉल। हालाँकि बाद में इसे केवल स्कॉल कहा जाने लगा। बाद में अध्याय 10 में, इसे केवल स्कॉल कहा गया, ठीक उसी शब्द का उपयोग करते हुए जॉन ने स्कॉल को संदर्भित करने के लिए अध्याय 5 में उपयोग किया था।

लेकिन सवाल यह है कि यह क्या है? जॉन अब यह स्कॉल क्या देखता है? मैं दो विशेषताएं सुझाऊंगा जो स्कॉल की पहचान की ओर इशारा करती हैं। उनमें से एक तथ्य यह है कि यदि यह सच है कि यह देवदूत है, कि हमें देवदूत की पहचान मसीह के साथ करनी है, तो यह मसीह ही है जिसने अध्याय 10 में पुस्तक पकड़ रखी है। इसके अलावा, यह दिलचस्प है कि इस पुस्तक का वर्णन इस प्रकार किया गया है एक शब्द को उसी व्याकरणिक रूप में उपयोग करके खोला गया जैसा कि स्कॉल के अध्याय 5 में सीलबंद शब्द के रूप में इस्तेमाल किया गया था।

अब, हम मसीह को एक खुली हुई पुस्तक पकड़े हुए पाते हैं। तो, इन दोनों को जोड़ने पर, चूंकि यीशु, यदि यह स्वर्गदूत यीशु मसीह है, ने पुस्तक पकड़ रखी है, और चूंकि वह अब इसे खुला रखता है, तो हमें संभवतः अध्याय 5 से उसी पुस्तक की पहचान करनी चाहिए। सील कर दी गई थी और वह अध्याय 6 और अध्याय 8 में सातवीं मुहर के माध्यम से खुल गई, अब अंत में अध्याय 10 में, वह मेमना जिसने पुस्तक ली, अध्याय 5 में मारा गया मेमना जिसने सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने हाथ से पुस्तक ली, अब जैसे एक शक्तिशाली स्वर्गदूत पुस्तक को पकड़ता है, लेकिन अब यह खुला है, अध्याय 5 की तरह अब सील नहीं किया गया है, अब यह खुला हुआ है। अन्य महत्वपूर्ण विशेषता जो यह बताती है कि पहचान अध्याय 5 में स्कॉल के पीछे है, और अध्याय 10 में स्कॉल में ईजेकील के अध्याय 2 के समान पुराने नियम की पृष्ठभूमि है। ईजेकील अध्याय 2 स्कॉल के लिए एक प्रकार का मॉडल या इंटरटेक्स्ट प्रदान करता है। दोनों अध्याय 5 और यहाँ अध्याय 10 में।

इसलिए, फिर से, हमें इस पुस्तक को अध्याय 10 में देखना चाहिए कि शक्तिशाली स्वर्गदूत जो मसीह है, अब उसी पुस्तक के रूप में खुला रखता है जिसे वह मारे गए मेमने के रूप में लेने के योग्य था, सीलबंद पुस्तक जिसे वह अध्याय 5 में लेने के योग्य था, अब वह खुल गया है, अब खुला है, और अब वह यह पुस्तक यूहन्ना को देगा। इससे संभवतः यह भी पता चलता है कि मुहरों और तुरही हैं, जैसा कि मुझे लगता है कि बाकी रहस्योद्घाटन सामने आएगा, मुहरों और तुरही को संभवतः प्रारंभिक निर्णय के रूप में देखा जाना चाहिए जो कि आने वाले अधिक निर्णयों के प्रारंभिक निर्णय हैं, विशेष रूप से अंतिम भविष्य में फैसला आना है। अब, यह कहने के बाद, हमें इस अध्याय से क्या लेना-देना है? रिचर्ड बॉखम, हमने कई बार उनका उल्लेख किया है, और वह अध्याय 10 को इस तरह समझते हैं।

वह कहते हैं और अध्याय 11 एक साथ, अध्याय 10 एक प्रकार से 11 का परिचय प्रदान करता है। अध्याय 6 से 9 के प्रकाश में, अध्याय 6 से 9 को मूल रूप से पृथ्वी पर विपत्तियों, न्याय विपत्तियों द्वारा चित्रित किया गया है, और अध्याय 9 कथन के साथ समाप्त होता है कि जो लोग प्लेग से नहीं मरे वे अब भी पश्चाताप करने से इन्कार करते हैं। और बाउकॉम 10 को ईश्वर के राज्य की स्थापना और दुनिया को पुनः प्राप्त करने की एक नई रणनीति के रूप में समझता है।

यानी अभी तक जजमेंट ने ऐसा नहीं किया है। भगवान ने किया है, और बाउकॉम यह सुझाव नहीं दे रहा है कि भगवान ने कुछ ऐसा प्रयास किया जो काम नहीं आया, लेकिन अब वह कुछ और प्रयास कर रहा है। इससे भी अधिक वह यह प्रदर्शित कर रहा है कि निर्णय पर्याप्त नहीं है।

यह मुहरों और तुरही की विपत्तियों के रूप में निर्णय नहीं है जो पश्चाताप लाता है। लोग 9 के अंत में पश्चाताप नहीं करते हैं। लेकिन राष्ट्रों को पश्चाताप की ओर क्या ले जाएगा? बाउकॉम का कहना है कि अध्याय 10 और 11 इसका उत्तर हैं। अब जॉन भविष्यवाणी करने जा रहा है।

यहाँ एक ताज़ा भविष्यवाणी, एक नई रणनीति है। अब, अध्याय 11 में दो गवाहों की कष्टदायक वफ़ादार गवाही के माध्यम से ही ईश्वर दुनिया को जीतेगा और दुनिया को पश्चाताप के लिए लाया जाएगा और वह ईश्वर के शासन का हिस्सा बन जाएगा। अब, इसमें कुछ सच्चाई हो सकती है।

हालाँकि, मुझे ऐसा लगता है कि 10 और 11 में भी, उस खंड में प्रमुख जोर अभी भी निर्णय पर है। और इसलिए मुझे लगता है कि रणनीति में बदलाव देखने के विपरीत, अब यह तरीका है कि राष्ट्र पश्चाताप करने के लिए एक हो जाएंगे, हालाँकि पश्चाताप अध्याय 11 के अंत में वफ़ादारों की गवाही के बाद होता है, दो वफ़ादार गवाहों के बाद, हालाँकि हम उस बारे में तब बात करेंगे जब हम वहाँ पहुँचेंगे। साथ ही, ऐसा प्रतीत होता है कि न्याय अभी भी प्रमुख विषय है, इसलिए अध्याय 10 और 11 अब राष्ट्रों को पश्चाताप में लाने के लिए कोई नई रणनीति नहीं हैं, बल्कि यह प्रदर्शित करते हैं कि दुनिया का न्याय क्यों आता है और दुनिया पर भगवान का न्याय कैसे होता है आता है।

यह उसकी वफ़ादार गवाही के परिणामस्वरूप आता है। यह उस वफ़ादार गवाह के परिणामस्वरूप आता है जिसे संसार अस्वीकार करता है और जिसे संसार सताता है और अंततः मौत के घाट उतार देता है। तो इस तरह मैं अध्याय 10 और 11 को समझता हूँ।

जॉन को भविष्यवाणी करने के लिए नियुक्त किया गया है, लेकिन अब वह ईश्वर के न्याय की प्रकृति को और अधिक विस्तार से समझाने जा रहा है, दुनिया पर उसके फैसले के संदर्भ में ईश्वर का राज्य कैसे स्थापित होने जा रहा है, और ऐसा इसलिए है क्योंकि दुनिया, इसके परिणामस्वरूप अध्याय 11 में अपने दो गवाहों की वफादार गवाही, दुनिया अस्वीकार करती है और सताती है और मौत के घाट उतार देती है, और यही उन पर उसके फैसले का आधार बन जाता है, जो तुरही संख्या सात में घटित होता है जो बाद में अध्याय 11 में होता है। अब, मैं श्लोक 3 और 4, और फिर अध्याय 10 में, एक और दिलचस्प विशेषता यह है कि हमें श्लोक 3 और 4 में एक आवाज मिलती है। वास्तव में, हमें श्लोक 3 के अंत में सात गड़गड़ाहट मिलती है। उसने जोर से चिल्लाया, और जब वह चिल्लाया, सात गर्जनाओं की आवाजें बोलीं। तो अब हम सात गर्जनाओं की आवाज़ से परिचित हो गए हैं, और जो दिलचस्प है वह यह है कि यह हमें अभी बहुत कुछ नहीं बताता है, लेकिन अगली कविता स्पष्ट रूप से सुझाव देती है कि इन आवाज़ों ने कुछ ऐसा कहा है जिसे जॉन समझ सकता था और कर सकता था लिख दिया गया है, फिर भी उसे ऐसा नहीं करने को कहा गया है।

इसके बजाय, उन्हें उन्हें सील करने के लिए कहा गया है। प्रकाशितवाक्य की शेष पुस्तक सीलबंद है। पुस्तक के अंत में, एक पाठ जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, जॉन से कहा गया है कि सामग्री को सील न करें क्योंकि सीलिंग का मतलब छिपाना और ढंकना है, इसका मतलब है कि कुछ होने वाला नहीं है या यह वर्तमान के लिए नहीं है समय।

इसलिए जॉन से कहा गया है कि वह अपनी पुस्तक को सील न करें, लेकिन इस एक स्थान पर, उससे कहा गया है कि वह इन सात गर्जनाओं को सील कर दे। और सवाल यह है कि, ये सात गड़गड़ाहटें क्या रही होंगी, और जॉन को उन्हें सील करने के लिए क्यों कहा गया है? कुछ संभावित स्पष्टीकरण, और वैसे, संख्या सात पर फिर से ध्यान दें, जो न केवल सात शाब्दिक गड़गड़ाहट का सुझाव देता है, बल्कि सात पूर्णता, पूर्णता और पूर्णता के प्रतीक की छवि है। एक संभावना जो कुछ लोगों ने सुझाई है वह यह है कि जॉन को इन सात गर्जनाओं की सामग्री का खुलासा करने की अनुमति नहीं है; वे चाहे कुछ भी हों, हम नहीं जानते क्योंकि उस ने उन पर मुहर लगा दी है।

तथ्य यह है कि जॉन को सामग्री का खुलासा करने की अनुमति नहीं है, यह बताता है कि भगवान ने सब कुछ प्रकट नहीं किया है, यह बताता है कि कुछ स्तर पर भगवान की योजनाएँ अभी भी छिपी हुई हैं, कि जिस तरह से भगवान अपने उद्देश्यों को पूरा करने जा रहे हैं वह अभी भी कुछ हद तक एक रहस्य बना हुआ है, और हम सब कुछ नहीं पता। यह एक संभावना है। एक और संभावना जो सुझाई गई है, और यह अगले दो के बारे में सच है, मैं सिर्फ तीन को देखूंगा, लेकिन अगले दो, और वह गड़गड़ाहट के संबंध में नंबर सात है, इसे सात मुहरों के संदर्भ में रखता है और सात तुरहियाँ।

तो सात गर्जनाएँ आगे के सात निर्णय होंगी। तो तुम्हारे पास सात मुहरें, सात तुरहियाँ, और फिर सात गड़गड़ाहटें भी होंगी। और दूसरा दृष्टिकोण बताता है कि उन्हें सील करके, यानी उन्हें घटित होने की अनुमति न देकर, ईश्वर दयालुतापूर्वक अपने निर्णय को कम कर रहा है।

इसलिए, और भी निर्णय हो सकते थे, लेकिन अपनी कृपा और दया से, भगवान ने मानवता पर अपना निर्णय कम कर दिया है। इसका तीसरा दृष्टिकोण यह है कि, दूसरे दृष्टिकोण की तरह, तीसरा दृष्टिकोण कहता है कि यह विपत्तियों की एक और श्रृंखला है, जैसे सात मुहरें, सात तुरही, और अब सात गड़गड़ाहट वाली विपत्तियाँ। यह विपत्तियों की एक और श्रृंखला है जिसे ईश्वर भेज सकता है, लेकिन वह ऐसा नहीं करेगा जैसा उसने तुरहियों और कटोरे के साथ किया था।

भगवान उन्हें नहीं भेजेंगे। इसके बजाय, जॉन को उन्हें सील करने के लिए कहा गया ताकि वे घटित न हों क्योंकि मानवता ने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया है। और इस तरह अध्याय नौ समाप्त होता है। इसलिए परमेश्वर तुरही और कटोरे की तरह कोई और प्रारंभिक निर्णय नहीं भेजने जा रहा है।

इसके बजाय, चीजें सीधे अंतिम निर्णय की ओर बढ़ने वाली हैं। परमेश्वर अपना क्रोध और अपना न्याय प्रगट करने जा रहा है, और मुहरों और तुरहियों के समान कोई प्रारंभिक न्याय नहीं होगा। अब, सात गड़गड़ाहटें, जो आगे के निर्णय, प्लेग निर्णयों का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं, को सील कर दिया जाएगा या निलंबित कर दिया जाएगा।

वे घटित नहीं होंगे क्योंकि ईश्वर अब केवल प्रारंभिक निर्णयों के माध्यम से मानवता से नहीं निपटेगा, बल्कि अब वह अंतिम निर्णय सहित इतिहास के लिए अपने उद्देश्यों को पूरा करेगा। अध्याय संख्या एक में कुछ सच्चाई भी हो सकती है, कि शायद प्रभावों में से एक, यदि प्राथमिक इरादा नहीं है, तो ऐसा करने के प्रभावों में से एक यह सुझाव देना है कि कुछ जानकारी है जो हम नहीं जानते हैं। भगवान ने अपनी पूरी योजना का खुलासा नहीं किया है।

और इसलिए यह किसी भी ऐसे व्यक्ति के खिलाफ चेतावनी है जो बहुत अधिक आत्मविश्वास या यहां तक कि अहंकार के साथ यह जानने का दावा करेगा कि भविष्य में रहस्योद्घाटन कैसे पूरा होने वाला है। लेकिन पाँच से सात में, अब हमें देवदूत के शब्द मिलते हैं। देवदूत की पहचान, संभवतः, मारे गए मेमने, यीशु मसीह के व्यक्तित्व से की जा रही है।

अब, हमारी एक अलग छवि है। एक ओर, अध्याय एक में यीशु को मनुष्य के श्रेष्ठ पुत्र के रूप में देखा गया था। वह यहूदा के गोत्र का सिंह भी था।

फिर, वह वध किया हुआ मेमना था। अब वह एक शक्तिशाली देवदूत के रूप में प्रकट होता है। फिर से, लेखक मसीह को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखते हुए, सर्वनाशकारी कल्पना के साथ काम कर रहा है।

अब वह संप्रभु प्रभु है जो सारी सृष्टि पर खड़ा है, एक पैर ज़मीन पर, एक पैर समुद्र पर, जिस पर कई बार जोर दिया गया है। और श्लोक पाँच और सात में वह यही कहता है। तब जिस स्वर्गदूत को मैं ने समुद्र पर खड़ा देखा था, वह सब से पहिले अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर शपथ खाता है।

और फिर वह यह कहता है: अब और देरी नहीं होगी, या सचमुच, समय नहीं रहेगा। परन्तु उन दिनों में जब सातवाँ स्वर्गदूत अपनी तुरही फूंकने पर है, परमेश्वर का रहस्य पूरा हो जाएगा जैसा उसने अपने सेवकों, भविष्यवक्ताओं को घोषित किया था। फिर से, जॉन ने अपने दृष्टिकोण को पुराने नियम के भविष्यवाणी पाठ की पूर्ति के साथ जोड़ा।

वह भविष्यवाणी परंपरा की पूर्ति, चरमोत्कर्ष पर खड़ा है। अब, मैं इस भाषा पर थोड़ा गौर करना चाहता हूँ, पांच से सात में, यह भाषा, और समय नहीं रहेगा, या कोई और देरी नहीं होगी। इससे पहले कि हम ऐसा करें, एक महत्वपूर्ण बात यह समझ लेनी चाहिए कि इस देवदूत के साथ यहां क्या हो रहा है, और भाषण हमें फिर से पुराने नियम, डैनियल की किताब में ले जाता है।

और इस बार, विशेषकर दानिय्येल अध्याय 12 और पद सात। दरअसल, मैं पद्य से शुरुआत करने जा रहा हूँ; मैं अध्याय 12 के श्लोक एक से शुरू करूँगा, जो कि दानिय्येल का अंतिम अध्याय है, जो तब स्पष्ट रूप से भविष्यसूचक ग्रंथों में से एक है जिसे जॉन अब स्पष्ट रूप से इंगित कर रहा है कि इसकी पूर्ति होगी। डैनियल सहित उसके नौकरों, भविष्यवक्ताओं के वादों की अंतिम पूर्ति और परिणति अब अंततः साकार हो गई है।

तो डैनियल 12 समाप्त होता है, उस समय, माइकल, महान राजकुमार जो आपके लोगों की रक्षा करता है, उठेगा। संकट का समय आएगा, जैसा राष्ट्रों के आरंभ से अंत तक नहीं हुआ। परन्तु उस समय तेरे लोग, अर्थात् जिन सभी के नाम पुस्तक में लिखे हुए पाए जाएंगे, वे छुड़ाए जाएंगे।

बहुत से लोग जो पृथ्वी की धूल में सोते हैं, जाग उठेंगे, कुछ अनन्त जीवन के लिये, और दूसरे लज्जा और अनन्त तिरस्कार के लिये। जो बुद्धिमान हैं और जो आकाश की चमक की तरह चमकेंगे, और जो बहुतों को धार्मिकता की ओर ले जाते हैं, वे सितारों की तरह हमेशा-हमेशा के लिए चमकेंगे। परन्तु हे दानिय्येल, तू पुस्तक के शब्दों को अन्त के समय तक बन्द करके रखना।

कई लोग ज्ञान बढ़ाने के लिए इधर-उधर जाएंगे। तब मैं, डैनियल, ने देखा, और मेरे सामने दो अन्य लोग खड़े थे, एक नदी के इस तट पर और एक विपरीत तट पर। उनमें से एक ने नदी पर पानी के ऊपर, सनी के कपड़े पहने हुए आदमी से पूछा, इन आश्चर्यजनक चीजों के पूरा होने में कितना समय लगेगा? और वह आदमी, श्लोक सात, वह आदमी जो सनी का कपड़ा पहने हुए था, जो नदी के पानी के ऊपर था, उसने अपना दाहिना हाथ उठाया, जिसका उल्लेख अध्याय 10 में किया गया है, स्वर्गदूत ने अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाते हुए, अपना दाहिना हाथ और अपना बायां हाथ उठाया। स्वर्ग की ओर हाथ।

और मैं ने उसे अपनी शपथ खाते हुए सुना, वही बात जो स्वर्गदूत प्रकाशितवाक्य 10 में करता है, उसके द्वारा जो अनन्त काल तक जीवित है, यह कहते हुए, यह एक समय, कई बार और आधे समय के लिए होगा। अब, यह दिलचस्प है कि डैनियल उस भाषा का उपयोग करता है, यह एक समय, कई बार और आधे समय के लिए होगा। जॉन कहते हैं, नहीं, समय नहीं रहेगा।

क्यों? क्योंकि दानियेल और अन्य भविष्यवक्ता अब जो आशा कर रहे हैं वह अंततः पूरा होगा। अतः अब ऐतिहासिक अनुक्रम की कोई आवश्यकता नहीं है। अब ऐसे समय की आवश्यकता नहीं है जिसमें परमेश्वर इन चीज़ों का उद्घाटन करेगा।

लेकिन अब आखिरकार परिणति आएगी। भविष्यवक्ताओं ने जो वादा किया था वह अब अंततः पूरा होगा, और अब और देरी नहीं होगी। इसलिए जब जॉन कहता है कि समय नहीं रहेगा, तो वह यह नहीं कह रहा है कि समय का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, और हम बस कुछ अजीब अस्थायी अस्तित्व में हैं।

इसके बजाय वह यह कह रहा है कि ईश्वर की इतिहास की प्रगति अंततः अपनी चरम सीमा और पूर्णता तक पहुंचेगी। अंततः अंत आ जाएगा, और अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इतिहास में परमेश्वर को कार्य करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी, लेकिन पूर्णता आ जाएगी। इसे समझने का तरीका यह भी है कि इस सब को इस व्यापक संदर्भ में लाया जाए।

मुझे लगता है कि यह, फिर से, आंशिक रूप से अध्याय छह, श्लोक सात की प्रतिक्रिया है, जहां वेदी के नीचे मौजूद लोगों की आत्माओं के बारे में कहा जाता है, वे आश्चर्य करते हैं कि हे भगवान, कब तक, और उनसे कहा गया है कि वे अपने अंतिम पड़ाव तक थोड़ी देर और प्रतीक्षा करें। संख्या पूरी हो जाती है। वस्तुतः, उन्हें थोड़ा समय या थोड़े समय तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा जाता है। अब, अध्याय 10, छंद 6 से सात तक, हम पाते हैं कि समय अब नहीं रहा।

अब यह अपने चरम पर पहुंच गया है। अब यह अपनी पूर्णता पर पहुंच गया है। ताकि जब सातवीं तुरही फूँकी जाए, जैसा कि स्वर्गदूत आगे कहता है, जब सातवीं तुरही फूँकी जाती है, तो इस दुनिया के राज्य का पूर्ण न्याय और पूर्ण हार के परिणामस्वरूप उद्भव और पूर्ण समाप्ति और भगवान के राज्य का आगमन होगा।

जो, फिर से, अध्याय 11, 15 से 20 में घटित होता है। तो, इसे एक साथ रखते हुए, प्रकाशितवाक्य 6.10 पूछता है, हे भगवान, कब तक? और परमेश्वर उन से कहता है, थोड़ी देर और, थोड़ी देर, थोड़ी देर और ठहरो, जब तक तुम्हारे सताए हुए लोगों की गिनती पूरी न हो जाए। अब, उस पुकार के जवाब में, देवदूत अंततः आता है और कहता है, समय नहीं रहेगा।

अर्थात् अब पूर्णता आने वाली है। अब और कोई गड़गड़ाहट नहीं, कोई निर्णय नहीं। अब, अंतिम परिणति, संत की पुकार का अंतिम उत्तर, घटित होने वाला है।

देरी अब खत्म हो गई है। और फिर, अध्याय 11 में, लेखक स्पष्ट करता है कि यह वास्तव में चर्च की पीड़ित गवाही के माध्यम से होगा। तो कैसे, फिर से, ऐसा लगता है जैसे लेखक थोड़ा सा पीछे हट गया है।

आखिर यह कैसे पहुंचेगा? यह अंतिम निर्णय और संत की पुकार का उत्तर कैसे आएगा? यह चर्च की वफ़ादार गवाही के द्वारा घटित होगा। विडंबना यह है कि परमेश्वर का राज्य उसके राजाओं और पुजारियों के माध्यम से स्थापित किया जा रहा है, जो अपनी वफादार गवाही के कारण मृत्यु, उत्पीड़न और मृत्यु तक सहते हैं। और वही अंत समय का राज्य लाएगा।

वही अंतिम निर्णय लाएगा। अब, देवदूत उसका इंतजार कर रहा है और कहता है कि समय समाप्त हो गया है। अब और देरी नहीं है।

संतों की पुकार का उत्तर मिलने वाला है। भगवान अपने चर्च के वफादार गवाह के जवाब में न्याय करने वाले हैं। अध्याय 11 में, यह अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के फैसले और उनके संतों की अंतिम पुष्टि में जारी होगा।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के वादे और संदेश अब अपनी अंतिम परिणति पर पहुँचने वाले हैं। और समय की अब आवश्यकता नहीं रहेगी। उसको लाने की ऐतिहासिक प्रक्रिया अपने अंजाम और चरम तक पहुंचेगी।

उसके परिणामस्वरूप, फिर श्लोक 8 से 11 में, या वास्तव में श्लोक 8 से शुरू करते हुए, फिर जो आवाज़ मैंने स्वर्ग से सुनी, उसने मुझसे एक बार फिर बात की। और आवाज़ उससे कहती है कि जाकर पुस्तक उठा ले। यह पुस्तक शक्तिशाली स्वर्गदूत के हाथों में खुली है, जो संभवतः यीशु मसीह है; अब जॉन से कहा गया है कि वह उस पुस्तक को ले जाये।

तो, श्रृंखला पर ध्यान दें। यदि यह अध्याय 5 से वही स्कॉल है, तो श्रृंखला पर ध्यान दें। पुस्तक परमेश्वर के हाथ में है।

तब मसीह इसे वह व्यक्ति समझता है जो पुस्तक खोलने के योग्य है। अब जब उसने उसे खोल लिया है, अब यीशु ने वह पुस्तक यूहन्ना को दे दी है। पहली बात जो जॉन को करने के लिए कहा गया है वह है स्वर्गदूत के हाथ से पुस्तक लेना, और फिर उसे इसे खाने के लिए कहा गया है।

यह एक दिलचस्प विशेषता है लेकिन कुछ ऐसा है जिसकी हम निश्चित रूप से सर्वनाश-प्रकार के पाठ में अपेक्षा करेंगे। पुस्तक खाने की यह कल्पना और यह तथ्य कि जॉन आगे कहता है और कहता है कि जब आप इसे खाएंगे, तो यह आपके पेट में कड़वा हो जाएगा, हालांकि आपके मुंह में यह मीठा होगा। इसलिए जब जॉन इसे खाना शुरू करता है, तो स्पष्ट रूप से एक सर्वनाशकारी छवि, जब वह इसे खा रहा होता है तो यह वास्तव में मीठा होता है।

परन्तु जब वह उसके पेट में जाता है, और वह उसे पचाने लगता है, तो वह कट जाता है, और खट्टा हो जाता है। यह भाषा, एक बार फिर, ईजेकील की पुस्तक से निकली है। अध्याय 22, एक पुस्तक जिसके बारे में हमने कहा, अध्याय 5 में भी स्कॉल बैक का आधार बनता है।

अब, हम इसे 2 में स्कॉल के विवरण और स्कॉल के साथ जॉन के संबंध में एक भूमिका निभाते हुए पाते हैं। और ध्यान दें कि क्या होता है। यह जेकेल के अध्याय 2 में, मैं श्लोक 3 से शुरू करूंगा, उन्होंने मनुष्य के पुत्र, यह जेकेल को संबोधित करते हुए कहा, मैं तुम्हें इस्राएलियों के पास एक विद्रोही राष्ट्र में भेज रहा हूँ जिसने मेरे खिलाफ विद्रोह किया है। वे और उनके बाप आज तक मेरे विरुद्ध बलवा करते आए हैं।

जिन लोगों के पास मैं तुम्हें भेज रहा हूँ वे हठीले और जिद्दी हैं। उन से कहो, प्रभु यहोवा यही कहता है। और चाहे वे सुनें या न सुनें, क्योंकि वे विद्रोही घराने हैं, वे जान लेंगे कि उनके बीच में एक भविष्यद्वक्ता हुआ।

और हे मनुष्य के सन्तान, तू उन से या उनकी बातों से मत डर। यद्यपि तेरे चारों ओर झाड़ियाँ और काँटे हैं, और तू बिच्छुओं के बीच में रहता है, तौभी मत डर। डरो नहीं।

तुम्हें उनसे शब्द अवश्य बोलने चाहिए। श्लोक 8: परन्तु हे मनुष्य के सन्तान, मैं जो कहता हूँ उसे सुन। उस विद्रोही घर की तरह विद्रोह मत करो।

अपना मुँह खोलो और जो मैं तुम्हें दूँ वह खाओ। और फिर यहाँ आगे क्या होता है। फिर मैं ने दृष्टि की, और मैं ने देखा, कि एक हाथ मेरी ओर बढ़ा हुआ है।

इसमें एक पुस्तक थी जिसे जॉन ने प्रकाशितवाक्य 5 में अध्याय 2 पर बनाया था। इसमें एक पुस्तक थी, जिसे उसने मेरे सामने खोला। उसके दोनों ओर विलाप के शब्द और शोक के शब्द लिखे हुए थे। फिर यहजेकेल के अध्याय 3 में उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, जो कुछ तेरे साम्हने है उसे खा, और पुस्तक खा, तब जाकर इस्राएल के घराने से बातें कर।

इसलिये मैं ने अपना मुँह खोला, और उस ने मुझे खाने को वह पुस्तक दी। तब उस ने कहा, हे मनुष्य के सन्तान, जो पुस्तक मैं तुझे देता हूँ उसे खा, और उस से अपना पेट भर। इसलिये मैं ने उसे खाया, और उसका स्वाद मेरे मुँह में मधु सा मीठा हुआ।

यह वह भाषा है जिसका उपयोग जॉन उस परिदृश्य में करता है, जो उस शक्तिशाली देवदूत से पुस्तक लेता है, जो खुली पुस्तक रखता है, ठीक उसी तरह जैसे यहजेकेल अध्याय 2 में जॉन ने अपने हाथ से एक खुली पुस्तक ली थी। और फिर जॉन उसे खाता है यहजेकेल 2 और 3 की तर्ज पर सर्वनाशकारी शैली में। जॉन इसे खाता है, और यह उसके मुँह में मीठा हो जाता है, लेकिन यह उसके पेट में कड़वा हो जाता है। मिठास और कड़वाहट की यह भाषा संभवतः जॉन के संदेश के चरित्र के संदर्भ में समझी जाती है। यानी, यह दिलचस्प है कि उनकी शुरुआत कड़वाहट से होती है; यह उसके पेट में खट्टा है।

आप सोचेंगे कि वह विपरीत दिशा में जाएगा, शुरुआत उसके मुँह में मीठी से होगी, लेकिन फिर यह उसके पेट में कड़वा होगा। उसकी शुरुआत खटास से होती है। मुझे आश्चर्य है क्योंकि, नंबर एक, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि खटास, मिठास और खटास शायद मुक्ति के संदेश का प्रतीक है, लेकिन साथ ही एक संदेश, खटास, निर्णय का संदेश भी है।

और खटास को पहले रखना, शायद, न्याय के संदेश पर जोर देने का एक तरीका है जिसे अब जॉन को बोलना शुरू करना है। इतना मीठा और खट्टा, मीठा और कड़वा, शायद वास्तव में स्क्रॉल खाने के प्रभावों का वर्णन करने के लिए नहीं है, हालांकि यह निश्चित रूप से किसी के पेट में दर्द देगा, प्रतीकात्मक रूप से उस संदेश का वर्णन करता है जिसे जॉन घोषित करने वाला है। यह मुक्ति का संदेश है लेकिन मुख्य रूप से यह न्याय का संदेश होगा।

अब अध्याय 10 तो, अध्याय 10 में यह पुनः आरंभ करने वाला दृश्य सेटिंग प्रदान करता है और अध्याय 11 के लिए पृष्ठभूमि प्रदान करता है। अध्याय 11 को संभवतः स्कॉल की सामग्री के मुख्य भाग के रूप में देखा जा सकता है। जहां तक स्कॉल की सटीक सामग्री क्या है, इसके बारे में कई अटकलें हैं।

यदि मुहरें और तुरही प्रारंभिक निर्णय की तरह हैं, तो अब, अध्याय 10 में, जॉन को मुख्य रूप से न्याय के संदेश की भविष्यवाणी करने के लिए फिर से नियुक्त किया गया है। हमें उस पुस्तक की सामग्री कहाँ मिलती है जो यूहन्ना को मिलती है और यूहन्ना अध्याय 10 में खाता है? कम से कम, इसमें अध्याय 11 शामिल है। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि यह अध्याय 19 तक जा सकता है, जो अभी भी एक निर्णय दृश्य है।

दूसरों ने सुझाव दिया है कि यह अध्याय 22 के अंत तक चल सकता है। और हम थोड़ी देर बाद उस पर लौटेंगे। लेकिन कम से कम, अध्याय 11 जॉन के संदेश या उस पुस्तक के संदेश के केंद्र में प्रतीत होता है जिसे जॉन अब खाता है।

लेकिन साथ ही, मुझे यकीन नहीं है कि हम इसे केवल यहीं तक सीमित रख सकते हैं। मुझे लगता है कि आप एक सम्मोहक मामला बना सकते हैं कि शायद किताब के बाकी हिस्से, अध्याय 21 और 22 तक, उस स्कॉल की सामग्री या संदेश शामिल होगा जिसे जॉन खाता है। एक संदेश जिसमें न्यायाधीश और मोक्ष दोनों शामिल हैं।

अब, अध्याय 11 में, अध्याय 10 में जॉन के आदेश के बाद, यह संदेश है, या कम से कम संदेश की शुरुआत है, जिसे जॉन को देना है। और यह जिस प्रश्न का उत्तर देता है और उठाता है वह यह है कि परमेश्वर अपने राज्य की स्थापना के लिए अपने उद्देश्यों को कैसे पूरा करेगा? विशेष रूप से उसका उद्देश्य, जिसे हम मुहरों और विपत्तियों में पाते हैं, उदाहरण के लिए, अपने लोगों की पुकार की प्रतिक्रिया के रूप में मानवता का न्याय करने का उसका उद्देश्य। ऐसा कैसे है कि ईश्वर संसार में अपने उद्देश्यों को पूरा करेगा? अध्याय 11 उत्तर देता है कि हमें उन दो वफादार गवाहों से परिचित कराते हुए जिन्हें ईश्वर ने स्थापित किया है, ईश्वर ने उन्हें अपना गवाह नियुक्त किया है।

और यह उनके गवाहों के माध्यम से है कि भगवान अपने राज्य की स्थापना के लिए अपने उद्देश्यों को पूरा करेंगे। यह उनके गवाहों के माध्यम से है जिन्हें अस्वीकार कर दिया गया है और जिन्हें सताया गया है और यहां तक कि मौत की सजा भी दी गई है कि भगवान पूरी दुनिया पर अपना फैसला सुनाने जा रहे हैं, जो फिर अध्याय 11 के सातवें तुरही में समाप्त होता है। इसलिए, फिर से, अध्याय 11 एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है भूमिका।

यह आधार बन रहा है। इन सभी निर्णयों के संदर्भ में चर्च क्या भूमिका निभाता है? ईश्वर अपना निर्णय किस आधार पर दे रहा है? इससे परमेश्वर अपना राज्य कैसे स्थापित करेगा और दुष्टों का न्याय करेगा और उनका बदला लेने के लिए संतों की पुकार का जवाब कैसे देगा? यह उसके लोगों की पीड़ा भरी गवाही के माध्यम से है जिन्हें प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 में अस्वीकार कर दिया गया और शत्रुतापूर्ण व्यवहार किया गया और अंततः मौत के घाट उतार दिया गया। अब,

प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 हमें दो छवियों से परिचित कराता है, जिनसे, एक बार फिर, हमें निपटना है।

हमने जॉन को ऐसा करते हुए काफी देखा है, वह हमें अलग-अलग छवियों से परिचित कराते हैं, कभी-कभी एक ही चीज़ का जिक्र करते हैं, कभी-कभी अन्य चीज़ों का जिक्र करते हैं। लेकिन यहां अध्याय 11 में, हमें दो अलग-अलग छवियों से परिचित कराया गया है। उनमें से एक मंदिर का है जिसकी पैमाइश की जाती है।

अध्याय 11 की शुरुआत जॉन को एक सरकंडा दिए जाने और एक मंदिर को मापने के लिए कहे जाने से होती है। दूसरी छवि दो गवाहों में से एक है, जो पद तीन से शुरू होती है, जहां भगवान फिर अपने दो गवाहों को बाहर जाकर भविष्यवाणी करने के लिए अपनी शक्ति और अधिकार देते हैं। अब, एक प्रश्न जिसका उत्तर हमें स्पष्ट रूप से फिर से देने की आवश्यकता है, जैसा कि हमारे पास कई अध्यायों में है, वह यह है कि दुनिया में कौन है या ये दो छवियां क्या हैं? उनकी पृष्ठभूमि और अर्थ क्या है? वे किसका उल्लेख कर सकते हैं? दो गवाह कौन हैं? यह कौन सा मंदिर है जिसे नापा जाता है? ये छवियाँ एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं? वे क्या दर्शाते हैं? अध्याय 10 और अध्याय 11 के साथ इस व्यापक खंड में जो चल रहा है उससे उनका क्या संबंध है? लेकिन इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, मुझे यह अनुभाग पढ़ने दीजिए।

मैं केवल श्लोक 14 तक अनुभाग को पढ़ूंगा, जहां, 15 से शुरू करके, हमें तुरही से परिचित कराया जाता है। मैं उस खंड को बाद में पढ़ूंगा, लेकिन मैं श्लोक 13 पर रुकूंगा, और हम बस इतनी दूर तक जाएंगे। अध्याय 11, पद 1. मुझे नापने की छड़ी के समान एक सरकण्डा दिया गया, और मुझ से कहा गया, जाकर परमेश्वर के मन्दिर और वेदी को नाप, और वहां उपासकों को गिन ले, परन्तु बाहरी आंगन को अलग कर।

इसे मत मापो, क्योंकि यह अन्यजातियों को दे दिया गया है। वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदते रहेंगे, और मैं अपने गवाहों को अधिकार दूंगा, और वे टाट ओढ़कर बारह 60 दिन तक भविष्यवाणी करते रहेंगे। ये दो जैतून के पेड़ और दो दीवट हैं जो पृथ्वी के प्रभु के साम्हने खड़े हैं।

यदि कोई उन्हें हानि पहुँचाने का प्रयत्न करेगा, तो उनके मुँह से आग निकलेगी और उनके शत्रुओं को भस्म कर देगी। इस प्रकार जो कोई उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है उसे मरना ही होगा। इन लोगों के पास आकाश को बंद करने की शक्ति है ताकि जिस समय वे भविष्यवाणी कर रहे हों उस दौरान बारिश न हो, और उनके पास पानी को खून में बदलने और जब भी वे चाहें पृथ्वी और हर तरह की महामारी को मारने की शक्ति है।

अब जब वे अपनी गवाही दे चुकेंगे, तो वह पशु जो अथाह अथाह से निकलेगा, उन पर आक्रमण करेगा, और उन पर प्रबल होकर उन्हें मार डालेगा। उनके शव उस महान नगर की सड़क पर पड़े रहेंगे, जिसे लाक्षणिक रूप से सदोम और मिस्र कहा जाता है, जहां उनके प्रभु को भी क्रूस पर चढ़ाया गया था। साढ़े तीन दिनों तक, हर व्यक्ति, जनजाति, भाषा और राष्ट्र के लोग उनके शवों को देखेंगे और उन्हें दफनाने से इनकार करेंगे।

पृथ्वी के निवासी उनके कारण आनन्द करेंगे, और एक दूसरे को भेंट भेजकर आनन्द मनाएंगे, क्योंकि इन दोनों भविष्यद्वक्ताओं ने पृथ्वी पर रहनेवालोंको सताया था। परन्तु साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन का झोंका उन में आया, और वे अपने पांवों पर खड़े हो गए, और उन्हें देखनेवालों पर भय छा गया। तब उन्होंने स्वर्ग से किसी ऊंचे शब्द को यह कहते हुए सुना, कि यहां ऊपर आओ, और वे बादल में होकर स्वर्ग पर चढ़ गए, और उनके शत्रु देखते रहे।

उसी समय, एक भयंकर भूकंप आया और शहर का दसवां हिस्सा ढह गया। भूकम्प में सात हजार मनुष्य मारे गये, और जो बचे वे भयभीत हो गये, और स्वर्ग के परमेश्वर की बड़ाई करने लगे। अब, इस अनुभाग में, हमें इन दो विशेषताओं के विवरण से परिचित कराया गया है।

जॉन को एक मंदिर को मापने के लिए कहा गया है, और ऐसा करने के लिए उसे एक छड़ी दी गई है। दिलचस्प बात यह है कि वह इसका केवल एक हिस्सा ही मापता है, और बाकी का हिस्सा अन्यजातियों के लिए फेंक दिया जाता है। हम इसे कैसे समझें? हम 42 महीने की इस अवधि को कैसे समझते हैं कि मंदिर का हिस्सा अन्यजातियों को रौंदने के लिए फेंक दिया जाता है? और फिर ये दोनों गवाह कौन हैं? हम कैसे समझें कि 1260 दिनों की इस अवधि के दौरान, उन्हें भविष्यवाणी करने की अनुमति है? हम उनके दुश्मनों को उनके मुँह से निकलने वाली आग से भस्म करने और आकाश को बंद करने में सक्षम होने के उनके मंत्रालय को कैसे समझ सकते हैं ताकि बारिश न हो? हम कैसे समझें कि यह जानवर रसातल से बाहर आ रहा है और उन्हें मौत के घाट उतार रहा है और सड़क पर पड़ा हुआ है ताकि सारी दुनिया साढ़े तीन दिनों तक देख सके, और अंत में, वे इसके पहले ही अंत में जीवित हो उठेंगे पूरी दुनिया देख रही है? इसलिए ऐसे कई मुद्दे हैं जिन पर हमें यह पता लगाने के लिए संघर्ष करने की आवश्यकता है कि अध्याय 11 में क्या चल रहा है और, इन दो छवियों के बीच क्या संबंध है, और वे इस संदेश के बारे में क्या कह रहे हैं जिसे जॉन को घोषित करना है। इसलिए, अगले भाग में, हम इन दो छवियों की पहचान के प्रश्न और कुछ अन्य मुद्दों को उठाएंगे जिनसे हमें प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 को समझने के लिए निपटने की आवश्यकता है।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र संख्या 15, रहस्योद्घाटन अध्याय 10 और 11, तुरही और अंतराल है।